BIODIVERSITY CONSERVTION: SCIENCE AND SOCIETY

~ Editor ~

DR. RAJESH CHOURASIA
Principal
Rani Durgawati Govt.P.G. College,
Mandla (M.P.)

PUBLISHED BY

AJAY BOOK SERVICE

4658A/21, Ansari Road, Darya Ganj

New Delhi – 110002 (INDIA)

Ph : 011-23287655, 011-41500196

Website : www.ajaybookservice.com

E-Mail : asagarbh@yahoo.com

First Edition 2022

Price : 1650/-

ISBN : 978-93-81794-32-6

Size: 5.5" x 8.5"

All rights reserved No. Part of this Publication may be Reproduced, Stored in a retrieval Systems, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, recording without the prior permission of Publishers.

Laser Type Setting By:

Ramisha Computer & Printers

922, Jatwara Darya Ganj, Delhi-110002

H.S. Offset Printers

New Delhi - 110002

INDEX

S.No.	Title	Page No.
1.	Indian Marriage "..ia a trap"- understanding the Novels of Shashi Deshpande **Dr. Anita Jhariya**	1
2.	बाल सहित्य का बाल–मनोवैज्ञानिक हाशिया (जैनेन्द्र की बाल कहानियों के संदर्भ में) **डॉ. एस. पी. धूमकेती**	7
3.	भारतीय सभ्यता संस्कृर्त एवं ऋग्वेद–प्रातिशाख्य स्वरोच्चारण दोष के संदर्भ में : एक अध्ययन **डॉ. पी. एल. झारिया**	12
4.	Social Environment An Overview of Condition of Dalit Women in India **Dr. T.P. Mishra**	22
5.	Commercial Change and Financial Data Management and Innovations — New Trends in Corporate **Dr. Arjun Singh Baghel**	27
6.	Level and Trends of Non-Banking Finance Companies in India **Dr. Shrikant Shrivastava**	40
7.	Environmental Effects of Some Medicinal Plant Extracts Against Multidrug Resistance Human Pathogenic Bacteria **Dr. B.L. Jhariya**	47
8.	Envirnonment and Microbes in Biocontrol of Heavy Metal Pollution **Dr. Seema Dhurvey**	56

9.	A New Trends of A Re-appraisal of the Genus Morchella in India **Dr. Zoodik Kujoor**	81
10.	भारतीय संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव (एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण) डॉ. श्रीमती नसीम बानो	90
11.	Commercial Development in India with Special Reference to Non-Banking Financial Companies- A Review **Dr. Arjun Singh Baghel**	95
12.	Recent Research and Contribution of Tourism Sector to Make in India **Dr. Bhuneshwar Tembhare**	104
13.	हिन्दी सहित्य में दलित स्त्री एवं आदिवासी विमर्श तथा हरिराम मीणा का साहित्य **डॉ. नवीन टेकाम**	114
14.	भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव (एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण) **डॉ. श्रीमती नसीम बानो**	122
15.	महाराजा छात्रसाल का साहित्य अनुराग **डॉ. सिया शरण ज्योतिषी**	127

बाल सहित्य का बाल–मनोवैज्ञानिक हाशिया (जैनेन्द्र की बाल कहानियों के संदर्भ में)

डॉ. एस. पी. धूमकेती
हिन्दी विभाग
रानी दुर्गावती शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मण्डला (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र में वरिष्ठ कथाकार जैनेन्द्र द्वारा बाल कहानियों के संदर्भ में बाल–साहित्य के बाल–मनोवैज्ञानिक हाशिये पर विचार किया गया है। बाल मन के विभिन्न भावों को चित्रित करने में जैनेन्द्र ने सफलता प्राप्त की है, जिसका प्रमाण इनकी बाल कहानियाँ हैं। मनोविज्ञान को आधार बनाकर साहित्य सृजन ने इन्हें विशिष्ट स्थान दिलाया है। इसके अंतर्गत जैनेन्द्र की अधिकतर बाल कहानियाँ बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। वे बाल मन के कुशल चितेरे हैं। इनकी बाल कहानियाँ इसी पक्ष को सिद्ध करती हैं। ऐसा अध्ययन अत्यंत संभावनाओं से भरा है। उनकी बाल कहानियाँ, बाल साहित्य के संदर्भ में अमूल्य धरोहर हैं।

जनेन्द्र हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से साहित्य की सभी विधाओं को समृद्ध किया। उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, अनुदित, यात्रा वर्णन, आलोचनात्मक साहित्य, निबंध संग्रह, बाल साहित्य आदि के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्य को अभूतपूर्व योगदान दिया। बाल साहित्य इनके कृतित्व का एक सशक्त पक्ष है। बाल मनोविज्ञान इनकी कहानियों में स्थान–स्थान पर मिलता है। बच्चे क्या सोचते हैं, क्या करना चाहते हैं, क्या इच्छाएँ हैं आदि। एक–एक दशा का चित्रण बरबस ध्यान आकर्षित करता है।

जैनेन्द के व्यक्तित्व पर प्रभाकर माचवे का कहना है कि ''उनके साहित्य में एक दम आकर्षित कर लेने वाली पहली बात है,. उनमें कूट कूट कर भरी हुई सरलता..... यही सरलता उनकी बाल कहानियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

चिड़िया की बच्ची, किसका रूपया, इनाम, तमाशा, दो साथी, खेल,हमसे सयाने बालक, पाजेब आदि बाल कहानियाँ बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रमुख मानी जाती हैं। आज के समय में बाल साहित्य बाल मन की जिज्ञासाओं, कल्पनाओं, बाल इच्छाओं, बाल संवेगों एवं सृजनात्मकता रेखांकित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. क्योंकि आज के सूचना प्रोद्यौगिकी के युग में

इंटरनेट मीडिया आदि के अधिक प्रसार प्रचलन ने बच्चों को अपनी ओर अधिक आकिर्षत किया है। बाल मन की इन्हीं मनोवृतियों जिज्ञासा, कल्पना, बाल मनोदशा का चित्रण, सृजनात्मकता, रूठने मनाने की प्रवृत्ति, भय, बाल इच्छाएँ आदि का वर्णन मिलता हैं, जिसका परिचय इस प्रकार

(1) कल्पना : प्रत्येक बच्चे में कल्पना प्रवृत्ति पाई जाती है। वह खेलते, हंसते, उठते, बैठते कुछ न कुछ अवश्य सोचते हैं। या यूँ कहा जाए कि उनके शैतानी दिमाग में कुछ न कुछ चलता रहता है। बच्चों की कल्पना के विषय में रवीन्द्रनाथ टैगोर का कहना है कि–''हम सत्य को भी असंभव कहकर छोड़ देते हैं और बच्चे असंभव को भी सत्य कह कर ग्रहण कर लेते हैं। बच्चे अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से बहुत कुछ सोच लेते हैं कि ऐसा होगा तो ऐसा करेगें। जिसकी उदाहरण इस प्रकार है :

''किसका रूपया' कहानी में बालक रमेश को जब बाग में पड़ा हुआ एक रूपया मिलता है, तो उस रूपये को लेकर वह अपने कल्पना जगत में घूमने लग जाता है और सोचता है कि वह इस रूपये से क्या क्या खरीदेगा। "एक रूपये में चौंसठ पैसे होते हैं। चौंसठ में से हर पैसे की आठ–आठ गोलियाँ और पैंसिल लाल, नीली और पैंसिल बनाने का चाकू, रबर.... मिठाई, खिलौने...आदि इस तरह की बहुत सी चीजों की तस्वीरें उसके मन में एक–एक करके आने लगी। अर्थात् एक रूपया पाकर वह इन सब चीजों को खरीदने की कल्पना करने लग जाता है।

(2) सृजनात्मकता :

कल्पना और सृजना एक ही सिक्के दो पहलू हैं। किसी भी प्रकार के सृजन के लिए कल्पना अपेक्षित है। बिना कल्पना के सृजन संभव नहीं। बाल कहानी खेल में बालिका सुरबाला द्वारा रेत की कुटी बनाना उसकी बाल सृजन का ही एक रूप है। जिसे जैनेन्द्र ने बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है– 'बालिका ने दो एक पक्के हाथ भाड़ पर लगा देखा कि भाड़ अब बिल्कुल बन गया.... सुरबाला ने धीरे–धीरे भाड़के नीचे से पैर खींच लिया। इस काम में वह सचमुच भाड़ को पुचकारती जाती थी। उसके पाँव पर ही तो भाड़ टिका है... पाँव साफ निकलने पर भाड़ जब ज्यों का त्यों टिका रहा। तब बालिका एक बार खुशी से नाच उठी.... फिर बालिका ने रेत की एक चुटकी ली और भाड़ के सिर पर छोड़ दी, फिर दूसरी, फिर तीसरी फिर चौथी... और धुआं निकलने के लिए एक सींक टेढ़ी करके उसमें गाड़ दी। बस पृथ्वी का सबसे सम्पूर्ण और विश्व की सबसे सुंदर वस्तु तैयार हो गई।

यह बालिका सुरबाला की सृजनात्मक प्रवृत्ति ही है, जो वह रेत पर अपनी कुटी बनाती है। बच्चों में यह सृजनात्मक प्रवृत्ति जन्मजात ही होती है। वह सदैव कुछ न कुछ बनाने या नया सृजन करने में क्रियाशील रहते हैं।

(3) बाल मनोदशा का चित्रण :

बालक मन से बहुत संवेदनशील और भोले–भाले होते हैं। उन पर किसी की कही बात का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है। विशेषतः अगर कोई बात उनके अध्यापकध्माता पिता द्वारा कही जाए। अध्यापक द्वारा कही गई बातध्डांट को लेकर ही जैनेन्द्र ने किसका रूपया' नामक कहानी में रमेश' की मनोदशा का चित्रण किया है कि अध्यापक की डांट का उस पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है। रमेश एक होशियार लड़का होने के साथ–साथ अपनी कक्षा का मानीटर भी था। रमेश अपने अध्यापक का प्रिय शिष्य भी था। लेकिन जब उसके कक्षा में पाँच सवाल में से दो गलत हो जाते हैं, तो मास्टर जी उसे डांटते हैं। ''मास्टर ने हाथ के फुटे को कसकर दो–तीन बार उसकी हथेली पर मारा और कहा 'जाओ उस कोने में मर्गा बनकर खडे हो जाओ..... तब वह गम सम होकर बैठा रहता है।''5घर आकर भी वह माँ के पूछने पर गुम सुम ही रहता है। माँ के डांटने पर वह चपचाप घर से बाहर चला जाता है और एक बाग में जाकर बैठता है। और अपनी ही सोच में डूबा रहता है। उसे कक्षा मानीटर होने के कारण मास्टर जी की डांट बहुत प्रभावित करती है। यहीं लेखक ने बालक की मनोदशा का चित्रण किया है कि वह लक्ष्यविहीन होकर घर से निकलता और फिर यह वापस भी आता ''उसके मन में कुछ न रह गया था। न इच्छा, न अनिच्छा, न क्रोध, न खुशी बस चुपचाप अपने घर की ओर चल दिया।

यह बच्चों की बाल मनोदशा ही है, जब बच्चे किसी बात से परेशान होकर या डर कर गुमसुम हो जाते हैं। इसी बाल मनोदशा का चित्रण जैनेन्द्र ने बाल कहानियों में किया।

(4) रूठने, मनाने की प्रवृत्ति :

यह प्रवृत्ति प्रत्येक बच्चे में पाई जाती है। यदि हम बच्चों को थोड़ा डांट दे या उनको किसी चीज के लिए मना कर दें, तो वह शीघ्रता से हमसे नाराज हो जाते हैं, लेकिन मनाने पर शीघ्रता से मान भी जाते हैं। बच्चों की एक दूसरे से रूठने मनाने की इसी प्रवृत्ति को जैनेन्द्र ने खेल कहानी में भी प्रस्तुत किया है। जब मनोहर सुरबाला का बनाया भाड या कुटी लात मार तोड़ देता है, तो सुरबाला मनोहर से रूठ जाती है, मानो उसके सपनों का घर मनोहर ने तोड़

दिया हो। मनोहर कहता है कि – 'सुरी रूठती क्यों है? बाला तनिक न हिलीसुरी! सुरी! .... ओ सुरी

मनोहर सुरी को मनाने का बहुत प्रयत्न करता है, ''मनोहर ने एक भाड़ बनाकर तैयार किया। कहा लो भाड़ बन गया... भाड़ के सिर पर एक सींक लगाकर और एक पत्ते की ओंट देकर कहा बना दिया. ... मनोहर गंगा जल की अंजलि से वह भाड़ का अभिषेक करना ही चाहता था कि सुरा रानी ने एक लात से भाड के सिर को चकनाचूर कर दिया और ये करके खुशी से नाच उठी।

इस प्रकार सुरबाला मनोहर द्वारा बनाए गए भाड को इसी प्रकार लात मार के तोड़ देती है और भाड़ के टूटने के साथ ही सारी नाराजगी, गुस्सा भी खत्म हो जाता है और दोनों फिर से आपस में खेलने लग जाते हैं।

(5) भय :

भय एक प्रकार से मानसिक संवेग है। बच्चों में भय की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। जिसे जैनेन्द्र ने अपनी बाल कहानी 'चिडिया की बच्ची' में बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

'चिडिया की बच्ची कहानी में सेठ जब चिड़िया को अपने सुंदर बाग का लालच देकर वहीं रहने को कहता है, तो चिड़िया सेठ माधवदास से बहुत डर जाती है, क्योंकि सेठ उसे अपने पास रखने के लिए कई प्रकार के लालच देता है, ताकि वह यहाँ अत्यंत सुख आराम से रहे और सेठ का मन बहला कर भयभीत हो जाती है और कहती है कि "मैं भटक कर तनिक आराम के लिए इस डाली पर रुक गई थी। अब भूलकर भी ऐसी गलती नहीं होगी। मैं अभी यहाँ से जा रही हूँ.... लेकिन जब सेठ उसे जबरदस्ती पकड़कर अपने पास रखना चाहता है, तब वह इतनी ज्यादा डर जाती है कि "तभी उड़ती हुई एक सांस में माँ के पास गई और माँ की गोद में गिरकर सबकने लगी ओ माँ ओ माँ ....बड़ी देर में उसे ढाढस बंधा और वह पलक मीच छाती में ही चिपक सोई जैसे अब पलक न खोलेगी।'' यहाँ लेखक ने चिडिया को प्रतीक बना बालमन के भय को प्रस्तत किया है कि जब बच्चे माता पिता से बिछुड़ किसी गलत लोगों के जाल में फंस जाते है तब उनके मन में भी चिड़िया की भांति ही भय उत्पन्न होता है।

(6) बाल इच्छाएँ :

''किसी वस्तु की प्राप्ति से मिलने वाली तृप्ति के लिए मन में उत्पन्न होने वाली कामना इच्छा है। इच्छा का संबंध मन अथवा हृदय से होता है। (10) बच्चों में किसी चीज को प्राप्त करने या लेने की इच्छा बहुत प्रबल होती है।

उनके मन में बहुत सी चीजें, वस्तुओं, खिलौनों आदि को लेने की इच्छाएँ जागृत होती रहती हैं। बच्चों की इसी इच्छा को जैनेन्द्र ने अपनी बाल कहानी 'पाजेब में भी दर्शाया है। पाजेब कहानी में चार साल की बालिका मुन्नी के मन में दूसरे बच्चों के पाँव में पाजेब पहनी देखकर वैसी ही पाजेब लेने की इच्छा जागृत होती है। वह कहती है कि बाबू जी हम भी पाजेब पहनेंगे. ... मैने कहा कि कैसी पाजेब? बोली कि हाँ! वही जैसी रूकमन पहनती है। जैसी शीला पहनती है। मुन्नी की पाजेब लेने की इच्छा उसकी बुआ जी पूरी करते है। मुन्नी पाजेब पहनकर बहुत खुश होती है और सबको दिखाती भी है।

अतः बाल मन के विभिन्न भावों को चित्रित करने में जैनेन्द्र ने सफलता प्राप्त की है, जिसका प्रमाण इनकी बाल कहानियाँ हैं। मनोविज्ञान को आधार बनाकर साहित्य सृजन ने इन्हें विशिष्ट स्थान दिलाया। इसी के अंतर्गत जैनेन्द्र की अधिकतर बाल कहानिया बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध हैं। जैनेन्द्र बाल मन के कुशल चितेरे हैं। इनकी बाल कहानियाँ इसी पक्ष को सिद्ध करती हैं, ऐसा अध्ययन अत्यंत संभावनाओं से भरा है।

संदर्भ :

(1) माचवे, प्रभाकर (संपा.) (1986) : जैनेन्द्र के विचार, पूर्वोदय प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 27.

(2) श्री प्रसाद : बाल साहित्य की अवधारणा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृ. 23.

(3) जैनेन्द्र (2014) : जैनेन्द्र कुमार की तीन बाल कहानियाँ, नैशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, पृ. 53.

(4) जैनेन्द्र (1979) : खेल, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 7 –8.

(5) जैनेन्द्र (2014) : जैनेन्द्र कुमार की तीन बाल कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, पृ. 45–46.

(6) वही, पृ. 53.

(7) जैनेन्द्र (1979) : खेल, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 10.

(8) वही, पृ. 11,12.

(9) जैनेन्द्र (2014) : जैनेन्द्र कुमार की तीन बाल कहानियाँ, नैशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, पृ. 40, 44.

(10) मैनी, धर्मपाल (संपा.) (2005) : मानवमूल्यपरक कोश, खण्ड 1, सहज एण्ड सन्स, दिल्ली, पृ. 365.

(11) जैनेन्द्र (1979) : खेल, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 23.